Sources of Prejudice

Page No. 01
Date 17/05/20

पूर्वाग्रह दुनिया में विभिन्न जातीय, नस्लीय, राजनीतिक और वैचारिक समूहों के बीच विभिन्न प्रकार के अशान्त संघर्षों का एक प्रमुख कारण रहा है। इसलिए, सामाजिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा अध्ययन और रिपोर्ट के अनुसार पूर्वाग्रह के विभिन्न स्रोतों पर चर्चा किया गया है-

Social Sources of Prejudice

(पूर्वाग्रह के सामाजिक स्रोत या उत्पत्ति के सामाजिक कारक):-

वास्तव में अधिकतर पूर्वाग्रह सीखे हुए ही होते हैं। पक्षपात के सीखने के इस प्रभाव के कारण पक्षपात दूर करने में शिक्षा का महत्व स्पष्ट होता है। आधुनिक समाजशास्त्री तथा समाज मनोवैज्ञानिक इस विचार से सहमत हैं कि पूर्वधारणा या अन्तर्समूह मनोवृत्ति के विकास पर सामाजिक कारकों का गहरा प्रभाव पड़ता है। सामाजीकरण-प्रक्रिया द्वारा पूर्वधारणायें समूह या समुदाय के सदस्यों में संचालित होती हैं।

इस संदर्भ में निम्नलिखित कारक या पूर्वाग्रह उत्पत्ति के स्रोत महत्वपूर्ण हैं:-

(1) सामाजिक शिक्षण (Social Learning):-

पूर्वाग्रह या पूर्वधारणा के विकास में सामाजिक

Scanned with CamScanner

शिक्षण का बहुत बड़ा हाथ होता है। सामाजिक शिक्षण का अर्थ वह शिक्षण है जो परिवार आदि सामाजिक परिवेश में घटित होता है। परिवार एक अनौपचारिक शिक्षालय होता है और माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्य उसके अनौपचारिक शिक्षक होते हैं। बच्चे अपने माता-पिता तथा अन्य सदस्यों के सम्पर्क में रहकर विभिन्न प्रकार के पूर्वाग्रहों को सीखते हैं।

2. औपचारिक शिक्षा (Formal Education) :

औपचारिक शिक्षा का तात्पर्य उस शिक्षा से है जो बच्चों को शिक्षकों द्वारा ~~पाठ~~ पाठशालाओं, मकतबों, स्कूलों, तथा कॉलेजों में दी जाती है। प्राथमिक समूह की अपेक्षा स्कूल का प्रभाव पूर्वधारणा के निर्माण पर कम पड़ता है, फिर भी हम इसकी उपेक्षा नहीं कर सकते। स्कूलों में शिक्षकों की भूमिका का अधिक महत्वपूर्ण स्थान है। मानवजातीय पूर्वधारणा से पीड़ित शिक्षकों के विचारों तथा व्यवहारों के अनुकरण तथा अनुकूलन के कारण छात्र भी इस रोग से पीड़ित हो जाते हैं।

3. धार्मिक विश्वास तथा अन्धविश्वास (Religious Beliefs and Superstitions) :- प्रत्येक समूह या सम्प्रदाय के प्रति उनके सदस्यों के लिए कुछ निश्चित अधिकार तथा

Scanned with CamScanner

कर्तव्य होते हैं। इन कर्तव्यों में समूह या सम्प्रदाय के धार्मिक विश्वासों तथा अन्धविश्वासों को स्वीकार करना तथा उन पर अमल करना भी शामिल है। भिन्न-भिन्न समूहों या सम्प्रदायों के ऐसे विश्वासों तथा अन्धविश्वासों में विरोध होने के कारण पूर्वधारणा विकसित होती है।

4. यौन-भिन्नता (Sex defference) :-

विशेष रूप से भारत में लड़कों तथा लड़कियों को इनकी यौन-भूमिका के अनुसार अलग-अलग विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। इस कारण उनमें भिन्न व्यक्तित्व-शीलगुणों का निर्माण होता है अतः पूर्वधारणा के निर्माण पर यौन कारक का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

5. सामाजिक वातावरण संबंधी सहारा (Social Environmental Supports) :-

पूर्वधारणा को विकसित होने तथा कायम रखने में सामाजिक वातावरण से संबंधित भिन्न-भिन्न सहारों का महत्वपूर्ण हाथ होता है। इनमें सामाजिक तथा राजनीतिक अलगाव अधिक महत्वपूर्ण है। इस अलगाववादी नीति से न केवल यह धारणा बनती है कि भिन्न-भिन्न मानवजातीय समूह एक-दूसरे से भिन्न हैं, बल्कि यह भी कि अमुक समूह श्रेष्ठ है और अमुक निम्न है। जैसे- सरकार द्वारा हरिजनों, निम्नवर्गों से

या अल्पसंख्यकों के लिए राजनीति, शिक्षा नौकरी आदि में आरक्षण, मुस्लिम विश्वविद्यालय, हिन्दू-विश्वविद्यालय, हरिजन कालनी हिन्दू महासभा, यादव सम्मेलन, मुस्लिम कान्फ्रेंस आदि पृथक्कीकरण या अलगाववाद के कारण मानवजातीय पूर्वधारणाओं की चेतना बढ़ती है, और इनके सम्पोषण में सहायता मिलती है। क्रेच एवं क्रचफिल्ड के अध्ययन से इस विचार का समर्थन होता है।

6. सामाजिक श्रेणीकरण (Social Categorization)-

पूर्वाग्रह या पूर्वधारणा के विकास में सामाजिक श्रेणीकरण का भी हाथ होता है। इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति सामाजिक जगत् को दो भिन्न भागों में विभाजित कर देता है। एक वह भाग, जिसे वह 'अपना' समझता है। इसको अन्तः समूह कहते हैं। दूसरा वह भाग जिसे वह 'अपना से भिन्न' समझता है, इसे बाह्य समूह कहते हैं, क्योंकि में अन्तःसमूह के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति का विकास होता है, जबकि बाह्य समूह के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति का विकास होता है। अन्तः समूह के प्रति आकर्षण एवं प्रेम का विकास होता है। अन्तः समूह के प्रति आकर्षण एवं प्रेम का विकास होता है जबकि बाह्य समूह के प्रति विकर्षण एवं घृणा या वैर-भाव का विकास होता है।

Scanned with CamScanner

7. जनसमूह माध्यम (Mass Media) :-

पूर्वधारणा के विकास तथा सम्पोषण पर जनसमूह के बीच सम्पर्क स्थापित करने वाले साधनों का प्रभाव पड़ता है। पुस्तकों, पत्रिकाओं, रेडियो, सोशलमीडिया, सिनेमा, टी०वी० आदि द्वारा संचालित सूचनाओं, कहानियों, नाटकों आदि का प्रभाव मानवजातीय पूर्वधारणाओं के सम्पोषण पर पड़ता है।

8. सामाजिक संरचना (Social Structure) :-

हर एक समाज में, भिन्न-भिन्न समूह सामाजिक संरचना में ऊँची-नीची विशेष स्थिति रखते हैं, इन स्थितियों में पर्याप्त सामाजिक दूरी होती है उदाहरण के लिए, हिन्दू समाज में सामाजिक संस्तरण में ब्राह्मण ऊँचे और शूद्र सबसे नीचे माने जाते हैं। इनमें सामाजिक दूरी अधिक होती है, जैसे- ब्राह्मण लोग शूद्रों को अपवित्र या नीच समझते हैं।

9. सांस्कृतिक अन्तर (Cultural Difference) :-

पूर्वाग्रह का मूल कारण सांस्कृतिक अन्तर है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी संस्कृति को ऊँचा समझता है और अन्य संस्कृति को नीचा समझता है। इस प्रकार विभिन्न संस्कृतियों से संबंधित व्यक्तियों में परस्पर दूरी बढ़ती जाती है।

Scanned with CamScanner

जो कि अन्त में घृणा का रूप ले लेती है। इससे वे एक-दूसरे के विषय में तरह-तरह के पूर्वाग्रह बना लेते हैं। उदाहरण के लिए, प्राचीन भारतीय संस्कृति के पुजारी, पश्चिम संस्कृति के रंगों लोगों से घृणा करते हैं। इसलिए वे उनके बारे में तरह-तरह के पक्षपात बना लेते हैं।

10. सामाजिक निषेध और प्रतिबन्ध (Social Taboos and Restriction):-

अनेक समूहों में एक-दूसरे के प्रति व्यवहार में तरह-तरह के सामाजिक निषेध और प्रतिबन्ध होते हैं। इन सामाजिक निषेधों का परिणाम यह होता है कि इनकी सामाजिक दूरी बढ़ती जाती है और परस्पर अनेक प्रकार के पक्षपात बन जाते हैं। विषमलिंगीय व्यक्तियों के व्यवहार के सम्बन्ध में निषेधों का एक अन्य प्रकार से प्रभाव पड़ता है।

11. सामाजिक परिस्थितियाँ (Social Conditions):

उपरोक्त सामाजिक कारकों के अलावा कुछ सामाजिक परिस्थितियाँ और घटनायें भी पक्षपात की उत्पत्ति का कारण बन जाती हैं। उदाहरण के लिए, भारत में जहाँ साम्प्रदायिक तनावों का परिणाम होती है दंगे, वहाँ उनका कारण हिन्दु-मुसलमानों में पक्षपात का बढ़ना है।

(Signature) ह०
Dr. S.K. Suman
Asst. Professor
Dept. of Psychology
Marwari College, Darbhanga